

— श्रव sich vermindern, sich legen: कास्मदिधो कलहो नावमूर्खेन्
MBh. 5, 811.

— उद् wieder zur Besinnung kommen Spr. 1971.

— प्र eine feste Gestalt annehmen Çat. Br. 10, 3, 2, 3. fg.

— चि, partic. 1) °मूर्ति geronnen, festgeworden: विमूर्तं नाभीयात्
Çāñkh. Ba. 6, 7. — 2) °मूर्कित a) zusammengeronnen: प्रथमे मासि सं-
क्लेदभूतो धातुविमूर्कितः (der Fötus) Jāti. 3, 75. तेलेन zu einer gallert-
artigen Masse geworden Viśbh. 1, 7, 43. — b) voll —, ganz erfüllt von:
क्राय° Bhāg. P. 9, 18, 34. पुत्रशोक° 6, 8, 35. — c) voll —, stark ertönend
von: मदनधाति° Bhāg. P. 4, 6, 12. मूर्कना रागगतिविशेषः; तद्याप Schol.
— Vgl. विमूर्खन.

— सम 1) zusammengerinnen, sich zusammenballen, sich verdichten,
festwerden: °मूर्कित Suçr. 1, 284, 13. 287, 17. प्रक्षेणितं गम्भीराशयस्थ-
मात्मप्रकृतिविकारं संमूर्कितं गम्भीरं इत्पुच्यते 336, 20. 2, 221, 14. कषाय Çāñhg.
Sañh. 3, 6, 21. रुविन्द्रोः किरणा: Varāh. Brh. S. 34, 1. संमूर्किताम् — धा-
त्वाम् Kir. 5, 41. MALLIN. zu Ciç. 4, 67 und Kir. 5, 38. वैवै च तत्र सुरभिः
पानमात्यानुलेपनैः । दिव्यः संमूर्कितो गन्धो द्रूपवानिव मारुतः ॥ R. 5, 13,
8. धूपसंमूर्कित (पवन) erfüllt von 2, 71, 25. ग्रोत्रेषु संमूर्किते रक्तमासां गी-
तानुगं वारिमृदङ्गवायम् sich verdichten so v. a. kräftig erschallen RAGH.
16, 64. — 2) betäubt werden: संमूर्कितमहायहु (समुद्र) R. 5, 3, 38. वेग-
संमूर्कितलोकसंघ Verz. d. Oxf. H. 237, a, 15. तस्या द्रूपेण सा शाला — सं-
मूर्कितवै वृद्धं शोभादृपां प्राप्तेव NILAK.) MBh. 4, 511. — Vgl. संमूर्खन. —
caus. 1) formen, gestalten: संमूर्कितवान् zur Erklärung von श्रमूर्क्यत्
Çāñk. zu Ait. Up. 1, 3. — 2) betäuben UTTARĀRĀMĀ. 33, 8.

— अभिसम् festwerden —, sich gestalten in Beziehung zu oder in
Verbindung mit: कर्म प्राणानभिसंमूर्खन् Çat. Br. 10, 3, 2, 8.

मूर्कता f. denseness bei BENFEY beruht auf einer falschen Auffassung
von मूर्कताम् (gen. pl. des partic. prae. von मूर्क) VIKR. 48.

मूर्खन (von मूर्ख simpl. und caus.) 1) nom. ag. a) betäubend; n. (sc. अथ) Bez. einer best. mythischen Waffe R. GOR. 1, 30, 17. — b) kräftigend,
befestigend: स्मरः (दौर) प्रङ्गारनैपुण्यं वीर्यस्तम्भनमेव च | कामसंदीपनं
ज्ञानं कामिनीप्रेयमूर्खनम् || PANĀK. 1, 11, 30. — 2) n. das Ohnmächtig-
werden Suçr. 1, 94, 21. 232, 14. 2, 343, 17. f. आ dass. RATIRAHASJA bei
MALLIN. zu Kir. 9, 50. — 3) n. das Mächtigsein, Walten, Wüthen: श्रवणं
चातिवर्षं च व्याधिवाकमूर्खनम् | सर्वमेतदा नासीत् Wüthen von Krank-
heiten und Feuer MBh. 2, 1208. 526 (wo wohl gleichfalls श्रवणं चाति-
वर्षं च st. श्रुत्वाऽप्यच निज्वर्षं zu lesen ist). An der ersten Stelle erklärt
NILAK. das Wort durch वृद्धि, an der zweiten durch प्रदोषन. राष्ट्रं च पी-
उपेतस्य शस्त्राण्यिबिषमूर्खनैः MBh. 12, 2617. — 4) n. Bez. eines best.
Processes bei der Darstellung von mineralischen Producten Verz. d. B.
H. No. 967. calcining quicksilver with sulphur, etc. WILSON. — 5) n. (nur
aus metrischen Rücksichten) und f. आ das Schwellen —, Aufsteigen der
Töne so v. a. Tonleiter; = रागगतिविशेष Schol. zu BHĀG. P. 4, 6, 12.
HARIV. 8463. तालमूर्खनकाविद् (स्थान st. ताल ed. Bomb.) R. 1, 4, 11.
MĀRK. 44, 14. स्वप्नमापि कृतां मूर्खनां विस्मरती so v. a. die von ihr selbst
gewählte Intonation vergessend MEGH. 84. MĀRK. P. 106, 58. PANĀK. 1,
11, 2, 3, 5, 36. 12, 9 (wo स्वरं st. सुरं zu lesen ist). Schol. zu KĀTJ. Çā-
13, 3, 18. वीर्णा मूर्खनालापवतों कृता Schol. zu BHĀG. P. 4, 6, 33. Jeder

Grāma, aus 7 Tönen bestehend, hat demnach 7 Mūrkhanā und die
3 Grāma zusammen 21 Mūrkhanā: गीतकानि च सप्तैव तावतीश्यापि
मूर्खनाः MĀRK. P. 23, 51. मूर्खनास्त्वेकविवंशतिः PANĀK. V, 43. ÇUK. in LA.
(II) 33, 4, wo २१st. ११ zu lesen ist. Am Ende eines adj. comp. (f. आ):
स्फुटीभवनामविशेषमूर्खनाम् — मूर्खतीम् (d. i. नारदस्य वीणाम्) Ciç. 1, 10.
Vgl. As. Res. 9, 467. fgg.

मूर्खी (wie eben) f. 1) Ohnmacht, Betäubung AK. 2, 8, 2, 78. H. 801.
HALĀL. 5, 53. MBh. 1, 5886. R. 2, 40, 18. Suçr. 1, 11, 12. 32, 4. 2, 474, 1.
475, 4. ÇĀRNG. SAÑH. 1, 7, 24. Verz. d. B. H. No. 934. 955. 966. 972. 973. 996.
Verz. d. Oxf. H. 313, a, 5. 316, a, No. 731. 337, a, No. 849. fg. भूतले मूर्ख-
या निपात PANĀK. 33, 10 (ed. orn. 31, 14). मूर्खामुवागमत् R. GOR. 2.
16, 21. मूर्खामाप्रोति BHĀG. P. 3, 31, 6. मूर्खी प्रापुः PANĀK. 1, 10, 36. 11, 5.
मूर्ख्याभिपरीताङ्कै MĀRK. P. 6, 3727. °परिस्तुत MĀRK. P. 24, 39. °प्रद 13, 64.
प्रस्तारमूर्खायामे RAGH. 7, 41. वर्धते सहृ पान्धानां मूर्ख्या चूतमञ्जरी Spr.
4973. MĀRK. 61, 18. UTTARĀRĀMĀ. 44, 7. MĀRK. P. 113, 12. fg. PANĀK.
3, 13, 22. PRATĀPAR. 38, a, 4. KĀVYĀD. 2, 156. Vgl. संपूर्ण०. — 2) = मूर्खन
4. Verz. d. Oxf. H. 320, a, 9. 321, b, No. 763. — 3) Tonleiter (s. मूर्खन 3):
क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणाम्। सा मूर्खत्युच्यते प्रामस्था एताः
सप्त सप्त च || Cīt. bei MALLIN. zu Ciç. 1, 10.

मूर्खात्पे (मूर्ख + आ०) f. in der Rhetorik eine durch eine Ohnmacht an
den Tag gelegte Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden
sei, KĀVYĀD. 2, 156. Beispiel Spr. 4727.

मूर्खात्वान m. N. pr. eines Chans COLEBB. Misc. Ess. II, 36. Verz. d. Oxf.
H. 193, a, N. 2. — Vgl. मूर्खात्वान.

मूर्खात्वान (von मूर्खा) adj. ohnmächtig AK. 2, 6, 2, 12. TRIK. 3, 3, 178. H.
461. MED. t. 46.

मूर्ण s. u. 2. मर्.

मूर्ति partic. praet. pass. von मूर्ख P. 6, 4, 21. 8, 2, 57. VOP. 26, 88. fg. 1)
zusammengeronnen: स्वप्नमूर्ति von selbst geronnen (द्विधि) TS. 1, 8, १, २.
— 2) festgeworden, gestaltet, körperhaft, substuntiell, verkörpert: =
यन AK. 3, 4, १०, १३. = कठिन TRIK. 3, 3, 178. MED. t. 46. = मूर्तिं-
पत् AK. 3, 2, 26. TRIK. H. 1449. MED. — Çat. Br. 10, 3, 2, 3. fgg. दे-
ब्रह्मणो द्रूपे मूर्ते चामूर्तं च मूर्त्यं चामूर्त्यं च 14, 3, १, १. PRAÇN. 1, 5. MAI-
TRJUP. 6, 3. मूर्ते सच्चभूतम् NI. 1, 1. मूर्तमस्मिन्दीयते (सच्चाताम् Schol.) 7, 27.
BHĀSHĀP. 86, 137. ÇĀMK. zu Brh. AR. UP. S. 16. VARĀH. Brh. S. 3, 4. MĀRK.
P. 23, 47. पर्दि च घटादेवत्पुमार्त्यः पारेच्छकः स्वीक्रियते NILAK. 119.
स (कालः) स्थूलसूक्ष्मवान्मूर्खनामूर्ते उच्यते SŪRJAS. 1, 10. प्राणादि कथेना
मूर्त्युयायोऽमूर्खसंज्ञकः 11. मूर्ते च गङ्गायमुने KUMĀRAS. 7, 42. पश्च. RAGH.
2, 69. समर्पितव्यलहमी 7, 67. विद्य ÇĀK. 32. स्कन्दप्रसाद KATHĀS. 2, 77.
3, 62. UTTARĀRĀMĀ. 46, 7. MĀRK. P. 96, 28. 101, 25. PRAB. 21, 19. आ० (s.
auch bes.) MBh. 3, 13936. VARĀH. Brh. S. 3, 3. ÇĀMK. zu Brh. AR. UP. S.
16. MĀRK. P. 23, 47. BHĀSHĀP. 87. — 3) ohnmächtig, betäubt AK. 2, 6, १.
12. TRIK. H. 461. MED. RAGH. ed. Calc. 2, 69.

मूर्तत्व (von मूर्ति) n. das Gestaltetsein, Körperhaftigkeit KAP. 1, 50. 3.
13. BHĀSHĀP. 24. आ० MĀRK. P. 26, 19. VOP. 4, 17.

मूर्तिपं m. N. pr. eines Sohnes des Kuça BHĀG. P. 9, 15, 4. — Vgl. मू-
र्तिमत्, श्रमूर्तराम्, मूर्तरेयम्.

मूर्तिै (von मूर्ख) P. 6, 4, 21. 1) f. a) ein fester Körper, feste —, mate-